P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मंझन कृत मधुमालती के पुनर्पाठ की सम्भावनाएं

जय प्रकाश यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
एम.एम.पी.जी. कॉलेज,
मोदीनगर, गाजियाबाद,
उ0 प्र0, भारत

सारांश

मंझन ने 'मधुमालती' लिखना सलीमशाह के राज्य में आरम्भ किया। यह सलीम शेरशाह सूरी का पुत्र था जो 1545 ई0 में शेरशाह के बाद शासक बना। उसी वर्ष मंझन ने 'मधुमालती' की रचना प्रारम्भ किया। सलीमशाह का व्यक्तित्व ऐसा था कि काबुल तथा हिन्द का द्वार एक हो गया था। सलीम शाह के संबंध में उल्लेख उसके पराक्रम, न्याय परता, तथा उसकी दानशीलता का है जो अत्युक्तिपूर्ण है। इसी प्रकार बढ़ा–चढ़ाकर 'शाह–ए वक्त' की प्रशंसा करना उस युग में एक प्रकार की काव्य रूढ़ि की ओर संकेत करता है। मंझन ने अपने गुरू गौस मुहम्मद की सिद्धियों की प्रशंसा बहुत विस्तार एवं निष्ठा से की है। ये शन्तारी संप्रदाय के सूफी संत थे। वे एक संत मात्र ही नहीं बल्कि अपने युग के राजनैतिक व्यक्ति भी थे। बाबर की इन पर बहुत श्रद्धा थी। इन्हीं की आज्ञा से बाबर ने हुमायूँ को छत्र दे दिया था। हुमायूँ पर उनके प्रभाव के कारण ही वे शेरशाह सूर के कोप का भाजन बने। उन्हें इसी कारण अज्ञातवास में भी जाना पडा। मंझन खिज़ खाँ के कृपा पात्र थे। इसलिए उस युग के इस ऐतिहासिक व्यक्तित्व का वर्णन भी यहाँ हुआ है। मंझन ने एक 'अनूप' गढ़ में बसने वाली चर्नाढी नगरी का वर्णन किया है जो 'चरणाद्रि' का अपभ्रंश है और इस समय चुनार के नाम से प्रसिद्ध है। सुरक्षित स्थिति में यह लंका के समान थी जो पूर्व में जरगी नदी तथा उत्तर और पश्चिम में गंगा से खाईं के समान घिरी हुई है। सन् 1545 ई0 में जब मुहम्मद गौस अज्ञातवास का परित्यागकर चुनार के निकटवर्ती गहन पर्वत वन प्रदेश से चले गये तो उनके मन में कथा कहने की इच्छा उत्पन्न हुई। इस रचना में कवि ने समस्त रसों में राजरस 'श्रृंगार' का वर्णन ही किया है तथा प्रेमाभिलाषी श्रोताओ–पाठकों के लिए इसे प्रस्तुत किया है। मंझन वचन को अमर मानते हुए कहते हैं कि उसकी उत्पत्ति मरणशील मनुष्य से नहीं हुई है, उसकी उत्पत्ति उस परमेश्वर से हुई है जो समस्त प्राणियों में व्याप्त है। वचन को मंझन दिव्य अवतार मानते हैं। मंझन एक सतर्क कवि हैं वे अनावश्यक कथनों के विस्तार से बचते हैं। जरा भी विषयान्तर हो जाने पर वे पश्चाताप करने लगते है। इस प्रकार कवि पुनरावृत्तियों से बचता है। वह शालीनता की मर्यादाओं का भी ध्यान रखता हैं। वह नायिका का नख–शिखा वर्णन करते हुए उसके गुहयांग का वर्णन इसलिए नहीं करना चाहता क्योंकि उसे गुरूजनों की लाज रखनी है।

मुख्य शब्द : प्रणयन, चरणाद्रि, अभिलाषी, नितंब, जंघ, नख–शिख, अमरत्व, सिद्धि, अद्वैतवाद, प्राणायम, निर्भीकता, इतिहास, अमरत्व, विनिमय, अमृतपान, अनुराग, अनुपम, कल्पना, मर्यादित।

प्रस्तावना

मंझन अपने समकालीन कवि जायसी से बहुत भिन्न हैं। जायसी के लिए विषयान्तर भी प्रायः उतना ही महत्वपूर्ण है जितना प्रस्तुत विषय। उनकी रचना 'पद्मावत' ऐसे विषयान्तरों से भरी पडी है। जायसी न तो पुनरावृत्तियों से घबराते हैं न ही मंझन जैसा गुरूजन की लाज के प्रति संकोच ही करते हैं। मंझन एक उत्कृष्ठ कथाकार हैं, महाकाव्य कार बनने का उन्हें तनिक भी मोह नहीं है। उनकी यह रचना केवल प्रेम–रसिक के लिए है। उनका लक्ष्य है प्रेम–रस, काव्य–रस, नहीं और उसी की दृष्टि से मंझन की इस कृति को देाने की जरूरत है। मंझन हिन्दू थे या मुसलान यह विवाद का विषय रहा है। इनकी समूची रचना में हिन्दू वातावरण का निर्वाह किया गया है। वे शपथ हिन्दू त्रिदेवों की दिलाते हैं। सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा की उत्पत्ति कमल से बताई गयी है। कवि स्वयं परमात्मा को 'ब्रह्मा' कहता है–

'पंडित मुनि जन ब्रहम बिचारी'

वचन की उत्पत्ति वह हरि मुख से बताता है–

''प्रथमहि आदि सिस्टि के पारा। हरिमुख बचन लीह औतारा

वह विधाता के द्वारा चार वेदों का निर्माण कहता है:

'चारि बेद बिधनैं निरमएऊ'

हिन्दू प्रतीकों का प्रयोग कर मंझन ने अपनी उदार धार्मिक प्रवृत्ति का परिचय दिया है। मंझन का जीवन दर्शन प्रेम मूलक है। रचना के आरंभ में ही उन्होंने ईश्वर, चार खलीफाओं, शाहेवक्त पीर, आश्रयदाता और शब्द ब्रह्म का गुणगान किया है। उन्होंने प्रेम और तद्नंतर योग का स्पष्ट प्रतिपादन किया है। वे कहते हैं कि प्रेम संसार में अमूल्य वस्तु है। विधाता ने प्रेम को व्यक्त करने के लिए ही संसार को उत्पन्न किया। उसी प्रेम को ग्रहण कर वह स्वयं भी व्यक्त हुआ। प्रेम की ज्योति से ही सृष्टि में प्रकाश हुआ। इसलिए प्रेम का समतुल्य संसार में नहीं है। बिरला ही कोई भाग्यवान इस प्रेम के सुहाग को प्राप्त करता है। जो इस प्रेम के यज्ञ में जीवन की आहुति देता है वही राजा है। इस प्रेम की बाजार में क्रय–विक्रय करना ही जीवन की सबसे बड़ी उपयोगिता है। संसार में जो कुछ भी इंद्रिय गम्य है वह प्रेम से परे कुछ भी नहीं है। प्रेम ही जीवन की ज्योति है। वह मृत्यु के परे अमरत्व देने वाला है। प्रेम सीखने से नहीं प्राप्त किया जा सकता है। यह तभी प्राप्त होता है जब दयालु ईश्वर दयावश इसे किसी को प्रदान करता है। एक मुसलमान होते हुए जीवन को ही सृष्टि का केन्द्र बिन्दु मानना तथा समस्त सृष्टि में व्याप्ति को स्वीकार करना मंझन के असाधारण साहस और निर्भीकता का प्रमाण है। मुस्लिम शासन एवं समाज में वे भारतीय अद्धैतवाद के खुले समर्थक थे। वे भारतीय योग साधना में भी विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि कर्मयोग से भी उस अलौकिक सुख का अनुभव किया जा सकता है यदि प्राणायाम के द्वारा शरीर की शुद्धि की जाय और उसके बाद अनाहत नाद की अनुभूति की जाय। इसी अनाहत नाद में स्थित होने पर शिवलोक का सुख प्राप्त होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

मंझन के काव्य के माध्यम से भारतीय कथा परंपरा का पूरा ज्ञान होता है। वे इसी क्रम में सलीमशाह की महानता का गुणगान करते हुए उसकी दान की प्रवृत्ति का जिक्र करते हैं। वह कर्ण से भी बड़ा दानी है। उसके दान के आगे कर्ण और बालि भी लज्जित हो जाते हैं। गुरू के महत्व को प्रतिपादित करना भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। गुरू का दर्शन दुःखों को धो डालता है। जो साधक गुरू दृष्टि का पालन करता है वह चारो युगों में राजा होता है। पुत्र लाभ पर विचार भी अध्ययन के उद्देश्य में समाहित है। कलिकाल में संतान से ही दूसरी आयु मिलती है तथा बिना पुत्र के जीवन और जन्म नष्ट हो जाता है। पुत्र से ही माता–पिता संसार में यश लाभ प्राप्त करते हैं। इस युग में राजा के लिए भी बेटी कष्ट का कारण है। एक प्रकार से यह समाज भी लैगिंक भेदभाव का शिकार है। स्त्री–पुरूष के बीच प्रेम का वर्णन भी मंझन का प्रमुख अभिष्ट है। संसार में जो भी इंद्रिय गम्य है वह प्रेम से परे अमरत्व देने वाला है। इस प्रकार समाज, सस्कृति, इतिहास एवं परम्परा की समीक्षा अध्ययन के उद्देश्य में समाहित है।

साहित्यावलोकन

मंझन की मुधमालती की एक खंडित प्रति ही प्राप्त हुई है। मुधमालती में पाँच चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम प्रस्तत है। इसमें कथा का विस्तार व कल्पना की प्रवणता है। मंझन ने यहां प्रेम भाव की आध्यात्मिक व्यंजना प्राकृतिक परिवेश की जीवन्तता के साथ किया है। 'मंझन की नायिका मुधमालती का रूप सौन्दर्य' शाहिद इलियास का एक महत्वपूर्ण लेख गूगल पर उपलब्ध है जिसमें मुधमालती के विराट एवं व्यापक रूप सौन्दर्य पर प्रकाश डाला गया है। मधुमालती प्रेम की सर्वोच्च एवं आदर्श कथा का प्रस्तुतीकरण है। यहाँ सूफी दर्शन का जीवन्त रूप प्रेमाख्यान के रूप में व्यक्त हुआ। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस रचना की कथानक शैली को भारतीय की अपेक्षा असीरियन माना है। वह इसलिए भी कि ये काव्य रूढ़ियाँ फारसी कवियों के माध्यम से भारत में मध्य युग में प्रस्तुत होने लगी थीं। इस अध्ययन में 'मधुमालती' का सुखवीर दन्त मिश्र के अनुवाद को प्रमुख आधार बनाया गया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का 'हिन्दी साहित्य का उदभव और विकास' का अवलोकन भी इस अध्ययन के केन्द्र में है। इसके अतिरिक्त इस विषय पर अन्य शोध कार्य व साहित्य मेरी जानकारी में नहीं है।

विश्लेषण

सूफी साहित्य का अधिकांश हिन्दी में लिखा गया है। मंझन की 'मधुमालती' भी ऐसी ही रचना है। ''हिन्दी सूफी काव्य की मूलभूत विशेषता इसमें निहित है कि वे पूर्णतः भारतीय हैं। उन्हें यहाँ की धरती, मौसम, पहाडों, समुंद्रो और मुनष्यों से गहरा प्रेम है।''[1] मंझन प्रेम के कवि हैं। कथानायक मनोहर कथा की नायिका मुधमालती से पहली बार अप्सराओं की सहायता से साक्षात्कार करता है। मधुमालती के प्रश्न करने पर बड़े विस्तार से वह प्रेम का इतिहास उसके सामने रखता है। वह कहता है कि उन दोनों का यह प्रेम चिरंतन एवं शाश्वत् है। उससे उसकी प्रीति और उसके दुःख का संबंध उसी क्षण से है जिस क्षण से विधाता ने उसके प्राणों की सृष्टि की। वस्तुतः उसकी प्रीति के नीर से उसकी मृत्तिका को सानकर ही उसके शरीर की रचना हुई हैः

''कहै कुंवर सुनु प्रेम पियारी।
तोहि मोहि प्रीति पुब्ब विधि सारी।
एहि जग जीव न मोहि तोहि लावा।
मैं जिव दै तोर दुक्ख बेसहारा।''[2]

मंझन कहते है कि शरीर में जब प्राण भी नहीं आया था, तभी प्रेमिका के विरह दुःख का दर्शन विधाता ने प्रेमी को करा दिया था। इसी कारण वह विरह दुःख प्रेमी के लिए उसके प्राणों से भी अधिक प्रिय है। इस दुःख पर वह अपने सहस्रों सुखों को वारने के लिए प्रस्तुत रहता है। उसके लिए दुःख के एक क्षण में जो आनंद है, वह चारों युग के सुखों में भी प्राप्य नही हैं। इस विरह दुःख ने मनुष्य को सृष्टि के आदि में ही अपना ग्रास बनाया था। जीव ने उसी समय से अपने को जीव करके जाना जिस दिन वह दुःख सृष्टि में समाया। इसलिए इस दुःख पर प्रेमी दोनों जगत इहलोक और परलोक के समस्त सुखों को न्यौछावर करने को तैयार रहता है क्योंकि यही दुःख वह अमृत है जिसने उसे अमरत्व प्रदान किया है। प्रेमिका

के इसी विरह दुःख के कारण प्रेमी का संसार में जन्म ग्रहण करना सफल होता है।

मंझन के अनुसार प्रेम का रहस्य यह है कि प्रेमी और प्रेमिका एक साथ ही होते हैं। इतना ही नहीं वे वस्तुतः एक होते हैं। जैसे एक ही जल से दो मिट्टियाँ सानी गई हों। अथवा एक ही जल दो प्रणालियों में बहने लगा हो। अथवा एक ही दीपक दो कक्षों में प्रकाश देनें लगा हो। अथवा एक ही जीव दो शरीरों में संचरित हुआ हो। अथवा एक ही अग्नि दो स्थानों पर जला दी गई हो। अथवा एक ही भवन के दो द्वार निर्मित किए गए हो।

''तैं मैं दुवौ सदा संघ बासी
और संतत् एक देह नेवासी।
औ मैं तु दुइ एक सरीरा।
दुई माटी सानी एक नीरा।।''[3]

मंझन के लिए प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे से सर्वदा अविच्छेद्य हैं। फागुन के महीने में नायिका अपनी पीड़ा सुनाती हुई कहती है कि हे सखी मेरी फाल्गुन मास की विपत्ति सुनो, विरह की अग्नि में जलकर मेरा शरीर होलिका हो गया। वृक्षों पर पत्तों का नाम भी शेष न रहा, मानों वे विरह की दावानल में जल गए। जगत भर में वनों और वाटिकाओं में पतझड़ हो चुका था और समस्त पुष्प वाटिकाएँ बिना पत्तों की हो गयी। सभी पक्षी वनों से विरक्त हो गये जब उन्होंने ढाक के सिर पर आग लगती देखी। जगत में वह कोई वृक्ष न था, जिसकी डालों से लगकर मैं न रोई होऊँः

''फागुन सखी विपत्ति सुनु मोरी।
बिरह अगिनि तन जरिभा होई।
तरून्ह पात कर रहा न नाऊँ।
जानहु जरे बिरह के दाऊं।
भा पतक्षार जगत बन वारी।
खांखरि भुई सभैं फुलवारी।
भए पंखि सभ बन बैरागी।
देखि ढांक सिरला गत आगी।
जगत माँझ सो बिरिख न कोई।
जेहि डारिहि मैं लागिन रोई।''[4]

नायक के लिए नायिका दुःख अति महत्वपूर्ण है। वह इस दुःख को जीवन का परम पुरूषार्थ मानता है तथा अपने समस्त सुखों को वह उस पर वार देता है। नायक कहता है कि उसने अपने आपको देकर प्रेमिका का दुःख उसने विनिमय में लिया है। पहले वह मरा है तब उसे अमृत पान करने को मिला है। शुक्ल जी ठीक लिखते हैं कि ''जिसके हृदय में वह विरह होता है उसके लिए यह संसार स्वच्छ दर्पण हो जाता है और इसमें परमात्मा के आभास अनेक रूपों में पड़ते है। तब वह देखता है कि इस सृष्टि के सारे रूप, सारे व्यापार उसी का विरह प्रकट कर रहे हैं।''[5] यह प्रेम का अमृत मरण के बिना नहीं प्राप्त होता। यही इस प्रेम साधना की सबसे बड़ी दुर्गमता है। कथा को समाप्त करते हुए भी कवि ने एक मात्र यही सन्देश दोहराया है। उसके अनुसार इस जगत में अमरत्व लाभ करने का एकमात्र उपाय है प्रेम में मरना। मरे हुए को मृत्यु नहीं मारती है। इसलिए प्रेम में जो मरण का अनुभव कर लेता है, उसे काल भी नही मार सकता है। एक बार प्रेम का यह साधक मरकर जीवन प्राप्त कर लेता है तो काल उसके निकट भी नहीं आता है। इसलिए यदि कोई दोनों जगत में काल के भय से उबरना चाहता है तो उसे प्रेम की शरण में आना चाहिए। मंझन को भारतीय कथा परंपरा का पूरा ज्ञान था। वे सलीमशाह की महानता का गुणगान करते हुए कहते हैं कि उसके दान की बात किस मुख से कहूँ जबकि वह राजाओं को सिंहासान और मुकुट देता है। वह जब दान का द्वार खोलता है जब कर्ण भी वहाँ आकर हाथ फैलाता है। उसके दान की दुंदुभी स्वर्ग तक जाकर बजी, हातिम, कर्ण, भोज और बलि लज्जित हो गए। सत्य में हरिश्चन्द्र, दान में बलि की, कला और धर्म में युधिष्ठिर होकर वह कलि में अवतीर्ण हुआ है। गुण और विधा में उसकी समकक्षता भोज भी नहीं कर पाता है और पौरूष में विक्रम भी उसके समकक्ष नहीं लाया जा सकता है। सातो द्वीपों तथा नवों खंडों में पृथ्वी में चारो और आनंद हो रहा है और एक मात्र विरह के दुःख को छोड़कर पृथ्वी में दूसरा द्वन्द्व नहीं है।

गुरू के महत्व को प्रतिपादित करते हुए मंझन कहते हैं कि गुरू का दर्शन दुःखों को धो डालने वाला होता है और वह दृष्टि धन्य है जो गुरू दर्शन पर अनुराग रखती है। जो साधक गुरू शिष्य दृष्टि का पालन करता है वह चारो युगो में राजा होता है।

''मधुमालती की कथा अत्यन्त लोकप्रिय थी जायसी ने भी इसकी चर्चा की है।''[6] इसकी भाषा की मिठास जायसी की अवधी की तरह ही है। मंझन ने अपनी रचना प्रक्रिया को बड़ी विनम्रता से समझाने का प्रयास किया है। वे कहते है कि एक कथा चिन्त में दैव ने उत्पन्न की, उसे कान देकर सुनो, मैं बखान कर उसे कह रहा हूँ। जो रसालु अमृत रस का रसिक हो वह इस कथा के गुणों और दोषों का विचार करे। क्योंकि जब आखर जोड़कर बनाये जाते हैं, गुणों के पीछे दोष छिपा लिए जाते हैं। यदि भले वचन सराहे न जा सकें, तो ओछे वचनों को भी दोष लगाकर बुरी भावना से न देखो। यदि पढ़कर कुछ भले वचन अलग कर सको, तो इस जन को दोष लगाकर उसके ओछे वचनों का नाश भी करो। जहाँ पर अक्षर न जुड़े हो संवार दो और भद्र होकर भले बुरे का विचार करो। उसके लिखने से ही क्या लाभ जो ओछा हो। यदि कोई मूर्ख मेरी रचना का उच्छेद करे, तो उसकी मुझे चिंता नहीं है। जगत में उस विद्वान का अवतार लेना धन्य है जो अर्थ के लिए दोषयुक्त वचनों को भी ग्रहण करता है। मुझे विश्वास है कि ज्ञानी मुझे दोष न लगाएगा और मूर्ख से मुझे अवश्य ही कुछ न प्राप्त होगा। यदि पंडित जन विरूद्ध न हों तो मूर्ख के दोष लगाने से क्या? लोग मेरे अक्षरों को समझ कर पढें और कोई भी उन्हें समझे बिना बुरी दृष्टि से न देखे। दस वचनों में से यदि एक ओछा भी हो तो कोई उसके सिर न चढ़े। मूर्ख अनुपम और भले वचनो को सुनकर तो सिर नवाकर चुप रह जाता है और उसकी प्रशंसा नहीं करता है। यदि कोई ओछा वचन पाता है तो उसको दौड़ कर पकड़ता है।

पुत्रलाभ पर विचार करते हुए मंझन कहते हैं कि कलिकाल में संतान से ही दूसरी आयु होती है और बिना पुत्र के जीवन और जन्म नष्ट हो जाता है। पुत्र से ही माता–पिता संसार में यश लाभ करते हैं। और पुत्र से ही उनके नाम युग–युग तक जीवित रहते हैं। पुत्र के बिना

कौन उनके मरने पर उनका नाम ले और पुत्र के बिना कौन और क्यों उन्हें पिंड दान करे? पुत्र के बिना माता–पिता का जीवन ही संसार में व्यर्थ हो जाता है, और और पुत्र–दीपक के बिना उनके लिए संसार ही अंधकार पूर्ण हो जाता है। किन्तु, मैंने यह सब सुपुत्र की बात कही, विधाता वंश में कुपुत्र न दे। सम्मान या वहीं स्त्रियाँ उपेक्षित थी। इस युग में पुत्र के प्रति सम्मान और मोह था वहीं स्त्रियां उपेक्षित थीं। राजा के लिए भी बेटी कष्ट का कारण थी। मंझन राजा के माध्यम से स्वयं कहलाते हैं कि विधाता ने जगत में दुहिता को जन्म क्यों दिया? यदि दुहिता का जन्म न होता, तो कोई इतना दुःख भार न सहन करता।

निष्कर्ष

मधुमालती की सारी कहानी, एक भारतीय नारी के मर कर भी अमर होने की कहानी है। नायक नायिका से अलग होने पर मरण के कष्टों का अनुभव करता है। मंझन के यहाँ प्रेम जहाँ एक ओर आध्यात्मिक है वहीं दूसरी ओर मांसल भी। जायसी ने इस शारीरिकता को केवल नायक–नायिका के विवाह के अनन्तर सुखशाला में दिखाया है। मंझन ने इसे उसके पूर्व भी दोनों के मिलन के चित्र खींचे है। मधुमालती के शयन कक्ष में अप्सराएँ जब मनोहर को पहुँचाती हैं तो वे दोनों आलिंगन–चुम्बन आदि का सुख उठाते हैं। जब प्रेमा उन्हें अपनी चित्रसारी में मिलाती है तो भी आलिंगन–चुम्बन आदि भी समस्त कलाएं प्रकाश में आती हैं। विवाह के बाद जब वे मिलते हैं तो इन सबकी अनिवार्यता स्वयं सिद्ध सी है। विवाह के पूर्व के दोनों बार के मिलन में सुरत–रस का आस्वादन वे शपथपूर्वक वहीं करते हैं और उसे वे विवाह के बाद ही भोगते हैं। जायसी के यहाँ नायक–नायिका का मिलन विवाह के पूर्व केवल शिव मंदिर में होता है और वह भी क्षणिक ही है। इसमें शारीरिक अभिचार के लिए अवसर नहीं है। निश्चित रूप से मंझन का जीवन दर्शन शारीरिक आवश्यकताओं की उपेक्षा नहीं करता। यह अवश्य है कि शारीरिक आवश्यकताओं को मर्यादित रखने का उपदेश देता है। इस शारीरिकता के अभाव में पुरूष और नारी की प्रेम कल्पना मिथ्या होती। इसीलिए इनके यहाँ मर्यादित शारीरिकता प्रेम साधना का महत्वपूर्ण अंग है।

अंत टिप्पणी

1. *बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–1997, पृ0 83*
2. *ले0 मंझन, मधुमालती, अनुवादक सुखवीर दन्त मिश्र, रामपुर रजा लाइब्रेरी, मोतीलाल बनारसी दाल पब्लिशर्स, 2005, पृ0 94*
3. *ले0 मंझन, मधुमालती, अनुवादक सुखवीर दन्त मिश्र, रामपुर रजा लाइब्रेरी, मोतीलाल बनारसी दाल पब्लिशर्स, 2005, पृ0 98*
4. *ले0 मंझन, मधुमालती, अनुवादक सुखवीर दन्त मिश्र, रामपुर रजा लाइब्रेरी, मोतीलाल बनारसी दाल पब्लिशर्स, 2005, पृ0 357*
5. *रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ0–62*
6. *बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–1997, पृ0 120*